इंडोबिस

3 सितंबर 2024 को, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के एक संबद्ध कार्यालय, समुद्री जीव संसाधन और पारिस्थितिकी केंद्र (सीएमएलआरई) ने अपने कोच्चि परिसर में हिंद महासागर जैव विविधता सूचना प्रणाली (इंडोबीआईएस) पर पहली राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला आयोजित की।

कार्यशाला के बारे में

- कार्यशाला में देश भर के विभिन्न संस्थानों के वैज्ञानिक और शोधकर्ता एकत्रित हुए।
- कार्यशाला से प्रतिभागियों के बीच समुद्री जैव विविधता डेटा दस्तावेजीकरण और प्रकाशन के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद मिली।

इंडोबिस के बारे में

- इंडोबिस वैश्विक महासागर जैव विविधता सूचना प्रणाली (ओबीआईएस) का भारतीय क्षेत्रीय नोड है।
- ओबीआईएस **समुद्री प्रजातियों पर सूचना के सबसे बड़े वैश्विक भण्डारों में से एक** है, जिसमें दुनिया भर के शोधकर्ताओं, सरकारों और संगठनों द्वारा प्रदान किए गए हजारों डेटासेटों से लाखों रिकॉर्ड शामिल हैं।
- यह विश्व के महासागरों में प्रजातियों के वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है, जिसमें उनकी उपस्थिति, आवास और पर्यावरणीय मापदंडों पर डेटा शामिल है।
- यह ऐसे उपकरण और सेवाएं प्रदान करता है जो उपयोगकर्ताओं को जैव विविधता डेटा खोजने, देखने और डाउनलोड करने की सुविधा प्रदान करते हैं।
- इसे **समुद्री विज्ञान, संरक्षण और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए यूनेस्को के अंतर-सरकारी महासागरीय आयोग (IOC) द्वारा स्थापित** किया गया है। यह अब IOC के अंतर्राष्ट्रीय महासागरीय डेटा और सूचना विनिमय (IODE) का एक अभिन्न अंग है।

इंडोबिस ओबीआईएस का एकमात्र भारतीय क्षेत्रीय नोड है, जिसे सीएमएलआरई द्वारा विकसित, सुविधायुक्त और संचालित किया जा रहा है। यह समुद्री जैवविविधता डेटा प्रकारों की कई श्रेणियों को स्वीकार करता है, जिसमें साहित्य और घटना, बहुतायत रिकॉर्ड, डीएनए-व्युत्पन्न या जीनोमिक प्रोफाइल आदि शामिल हैं।

सीएमएलआरई पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत एक प्रमुख अनुसंधान संस्थान है। इसकी स्थापना 1998 में हुई थी।

यह भारत में समुद्री जीवन संसाधनों के अध्ययन और सतत प्रबंधन के लिए समर्पित है। सीएमएलआरई, इंडओबीआईएस उद्देश्यों के भाग के रूप में गहरे समुद्र की जैव विविधता के वाउचर (संरक्षित) नमूनों का रखरखाव करता है।

राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन

भारत प्रतिवर्ष 5 सितंबर को पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1888-1975) की जयंती पर शिक्षक दिवस मनाता है।

एस राधाकृष्णन: हिंदू धर्म के एक दार्शनिक

- 20वीं सदी के भारत के सबसे प्रसिद्ध और प्रभावशाली विचारकों में से एक, **राधाकृष्णन का जीवन और कार्य हिंदू धर्म को परिभाषित करने, उसकी रक्षा करने और उसका प्रचार करने के लिए समर्पित था।** उन्हें दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में भारत और पश्चिम के बीच सेतु-निर्माता के रूप में देखा जाता है, और हिंदू धर्म के बारे में पश्चिम की समझ को आकार देने में उनकी भूमिका का श्रेय दिया जाता है।
- राधाकृष्णन 20वीं सदी में **अद्वैतवादी अद्वैत वेदांत परंपरा के अग्रणी समर्थकों में से एक थे,** और उन्होंने आधुनिक समय के लिए आदि शंकराचार्य के दर्शन की पुनर्व्याख्या की। ऐसा करते हुए, उन्होंने हिंदू धर्म का बचाव किया, जिसे उन्होंने "अज्ञानी पश्चिमी आलोचना" कहा।

आदरणीय शिक्षक

- 1920 के दशक तक राधाकृष्णन ने खुद को भारत के सबसे सम्मानित शिक्षाविदों में से एक के रूप में स्थापित कर लिया था। उन्होंने **1921 से 1932 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित किंग जॉर्ज पंचम चेयर पर कार्य किया, 1931 से 1936 तक आंध्र विश्वविद्यालय के दूसरे कुलपति** रहे तथा 1939 से 1948 तक बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के चौथे कुलपति रहे।
- उन्होंने 1936 से 1952 तक ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में **पूर्वी धर्म और नैतिकता के स्पैलिंग चेयर का भी कार्यभार** संभाला। राधाकृष्णन को 1931 में नाइट की उपाधि दी गई।

5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में क्यों मनाया जाता है?

- वे भारत के **पहले उपराष्ट्रपति (1952-62) और दूसरे राष्ट्रपति (1962-67) बने। 1962 में, जब वे राष्ट्रपति बने,** तो कुछ पुराने छात्रों ने उनका जन्मदिन मनाने की इच्छा जताई।
- राधाकृष्णन ने व्यक्तिगत उत्सव मनाने से इनकार कर दिया और इसके बजाय अपने छात्रों से अनुरोध किया कि वे उनकी जयंती पर देश भर के शिक्षकों का सम्मान करें। इस प्रकार 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाने की परंपरा शुरू हुई।

चांदीपुरा वायरस का जीनोम मानचित्रण

गांधीनगर स्थित गुजरात जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान केंद्र (जीबीआरसी) ने चांदीपुरा वेसिकुलोवायरस (सीएचपीवी) का एकमात्र पूर्णतः मैप किया गया जीनोम प्रकाशित किया है।

चांदीपुरा वायरस क्या है?

- चांदीपुरा एक वायरल संक्रमण है जो एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम (एईएस) या मस्तिष्क की सूजन के प्रकोप का कारण बन सकता है।
- **लक्षण:** यह बुखार, सिरदर्द और इंसेफेलाइटिस का कारण बनता है, जिससे ऐंठन, कोमा और मृत्यु हो जाती है, आमतौर पर लक्षण दिखने के कुछ दिनों के भीतर। रोग की तीव्र प्रगति इसकी परिभाषित विशेषताओं में से एक है।
- **संक्रमण:** इसे सबसे पहले 1965 में महाराष्ट्र में दर्ज किया गया था, चांदीपुरा वायरस सबसे ज़्यादा 15 साल से कम उम्र के बच्चों को प्रभावित करता है। यह सैंड फ्लाई, टिक्स और एडीज़ एजिप्टी मच्छरों से भी फैल सकता है जो डेंगू और चिकनगुनिया जैसे संक्रमण भी फैलाते हैं। शोधकर्ताओं ने पाया कि मौजूदा प्रकोप के दौरान सैंड फ्लाई वायरस को फैलाने के लिए ज़िम्मेदार थे।

- **मृत्यु दर:** विशिष्ट उपचार न होने के कारण, इस विषाणु के कारण मृत्यु दर 56 से 75 प्रतिशत तक हो सकती है, जैसा कि 2003 में आंध्र प्रदेश और गुजरात में भारत के सबसे खराब चांदीपुरा प्रकोप के दौरान देखा गया था, जिसमें 322 बच्चों की मौत हो गई थी।

जीनोम मैपिंग क्या है?

- जीनोम मैपिंग से तात्पर्य किसी **जीव के गुणसूत्रों पर जीन के स्थान का निर्धारण करने की प्रक्रिया** से है।
- जीनोम मैपिंग से इस बारे में महत्वपूर्ण सुराग मिलते हैं कि वायरस कहां से आता है, यह कैसे बदल रहा है, और क्या इसमें कोई उत्परिवर्तन है जो इसे अधिक संक्रामक या घातक बना सकता है। वायरल जीनोम को अनुक्रमित करने से शोधकर्ताओं को उन वायरस पर नज़र रखने में मदद मिलती है जो भविष्य में प्रकोप का कारण बन सकते हैं।

प्रोजेक्ट स्ट्रॉबेरी

दुनिया का प्रमुख कृत्रिम बुद्धिमत्ता अनुसंधान संगठन ओपनएआई अपना प्रोजेक्ट कोडनाम प्रोजेक्ट स्ट्रॉबेरी जारी करने वाला है।

प्रमुख बिंदु

- इस वर्ष शरद ऋतु (सितंबर-नवंबर) में इसके सबसे शक्तिशाली एआई मॉडल को जारी किए जाने की संभावना है।
- शुरू में इसे प्रोजेक्ट क्यू (क्यू-स्टार) के नाम से जाना जाता था।
- इससे स्वायत्त इंटरनेट अनुसंधान की सुविधा मिलने और एआई तर्क क्षमताओं में नाटकीय रूप से सुधार होने की उम्मीद है, और इसे मानव मस्तिष्क के समान क्षमताओं के साथ कृत्रिम सामान्य बुद्धिमत्ता बनाने के लिए ओपनएआई के प्रयास के रूप में पेश किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय सौर महोत्सव

पहला अंतर्राष्ट्रीय सौर महोत्सव नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

प्रमुख बिंदु

- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) ने 5-6 सितंबर, 2024 को नई दिल्ली में पहला अंतर्राष्ट्रीय सौर महोत्सव आयोजित किया।
- **महोत्सव के चार मुख्य विषय थे:** युवाओं, समुदायों, महिलाओं और निजी क्षेत्र की भूमिका।
- व्यवसाय, शिक्षा जगत, युवा और सामुदायिक नेताओं सहित अन्य लोगों ने ज्ञान साझा किया, नवाचार को बढ़ावा दिया और सौर ऊर्जा से चलने वाले भविष्य के निर्माण की दिशा में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का निर्माण किया।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) एक वैश्विक अंतर-सरकारी संगठन है जो कार्बन-तटस्थ भविष्य के लिए सौर ऊर्जा अपनाने को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

आईएसए का मिशन प्रौद्योगिकी और इसके वित्तपोषण की लागत को कम करते हुए सौर ऊर्जा में निवेश को बढ़ावा देना है।

आईएसए भारत में मुख्यालय वाला पहला बहुपक्षीय अंतर-सरकारी संगठन है और यह बहुपक्षीय संगठनों, सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों और नागरिक समाज के साथ मिलकर लागत प्रभावी और परिवर्तनकारी सौर समाधान लागू कर रहा है, विशेष रूप से सबसे कम विकसित देशों (एलडीसी) और छोटे द्वीप विकासशील राज्यों (एसआईडीएस) में।

समाचार में प्रजातियाँ

फ़्रीनाराचने डेसिपिएन्स	❖ **असम ने मकड़ी की एक ऐसी प्रजाति** को भारत की एराक्निड सूची में शामिल कर लिया है, जिसका जाला पक्षी के मल जैसा दिखता है। ❖ फ्रिनाराचने डेसिपिएन्स, जिसे पक्षी-मल या पक्षी-विष्ठा केकड़ा मकड़ी के रूप में जाना जाता है, मलेशिया और इंडोनेशिया के जावा और सुमात्रा में वितरित की गई थी। ❖ देश में पहली बार इसे असम के कामरूप (महानगर) जिले के सोनापुर और कोकराझार जिले के चिरांग रिजर्व फॉरेस्ट में दर्ज किया गया है।

समाचार में सैन्य अभ्यास

वरुण अभ्यास	**भारतीय और फ्रांसीसी नौसेना का द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास**	❖ भारतीय नौसेना के P8I विमान ने फ्रांसीसी नौसेना के साथ 'अभ्यास वरुण' में भाग लिया। ❖ भारत-फ्रांस द्विपक्षीय नौसैनिक **'अभ्यास वरुण' का 2024 संस्करण भूमध्य सागर में 2 से 4 सितंबर तक निर्धारित** किया गया था। ❖ **पृष्ठभूमि**: भारतीय और फ्रांसीसी नौसेना के बीच द्विपक्षीय नौसैनिक अभ्यास **1993 में शुरू** किया गया था। इस अभ्यास को बाद में 2001 में 'वरुण' नाम दिया गया और तब से यह भारत-फ्रांस के मजबूत सामरिक द्विपक्षीय संबंधों की पहचान बन गया है।

अन्य राज्यों से महत्वपूर्ण समसामयिकी

गुजरात	जल शक्ति मंत्रालय गुजरात सरकार के सहयोग से गुजरात में **"जल संचय जनभागीदारी"** पहल शुरू कर रहा है। इस कार्यक्रम के तहत सामुदायिक भागीदारी से राज्य भर में लगभग 24,800 वर्षा जल संचयन संरचनाओं का निर्माण किया जा रहा है। ये पुनर्भरण संरचनाएँ वर्षा जल संचयन को बढ़ाने और दीर्घकालिक जल स्थिरता सुनिश्चित करने में सहायक होंगी।

❍❍❍❍